7

जो कोई पूछे उसे उत्तर देने को तैयार रहो (1 पतरस 3:8-22)

कुछ वर्ष पूर्व पश्चिमी यूरोप में एक लैक्चर शृंखला के दौरान, मुझे कनाडा, अमेरिका, हॉलैंड, बैलज़ियम, फ्रांस और स्विट्जरलैंड और पश्चिम जर्मनी के मिशनरियों के साथ समय बिताने का कुछ समय मिला। पश्चिम जर्मनी में हम गेमुण्डन नामक एक गांव के पास एक यूथ कैंप के दौरान मिले। कई देशों के प्रतिनिधि वहां थे; कई लोग भाषण शृंखला में भाग लेने के लिए दूर-दूर से आए थे। मुझे अपने कंधे थप थपाना अच्छा लगता कि वे मेरे भाषण सुनने के लिए आए हैं, परन्तु जब मैंने देखा और सुना तो साफ़ हो गया कि वे एक-दूसरे की संगति में मगन थे। मसीह के लिए उनका जोश और एक-दूसरे के लिए प्रेम साफ़ दिखाई दे रहा था; मुझे लगा कि ये भावनाएं बड़े संघर्ष के कारण मिली हैं। मैंने अन्य स्थानों पर भी ऐसी भावनाएं देखीं हैं जहां संख्या छोटी होती है और समस्याएं बड़ी, मसीही लोगों को प्रभु पर निर्भर होना और सामर्थ के लिए एक-दूसरे की ओर देखना आवश्यक है।

पश्चिमी यूरोप के अपने भाइयों के साथ सप्ताह भर के अध्ययन और काम करने से मुझे एक ऐसे समाज के साथ भाईचारे के बोध का अनुभव हुआ, जो मुझे लगता है कि एशिया माइनर के आरम्भिक लोगों के समाज से अधिक भिन्न नहीं था। पतरस ने अपनी पहली पत्री उन मण्डलियों के नाम लिखी, जो संख्या में छोटी और बड़ी रुकावटों का सामना कर रही थीं, बड़ी अर्थात सुखी कलीसिया के सदस्यों को हो सकता है कि मसीह में जीवन और संसार में जीवन की सीमाओं की समझ न आए, परन्तु पतरस के पत्रों के मूल पाठकों के सामने ऐसी कोई परीक्षा नहीं थी। शत्रु उन्हें चुनौती देते, उन पर सवाल दागते और उनके विरुद्ध हास्यास्पद आरोप लगाते थे। उन्हें अपने विश्वास के उत्तर देने के लिए तैयार रहना पड़ता था। पतरस ने उन्हें सुझाव दिया कि मसीही ढंग अपमान का उत्तर आशीष के साथ देना (3:9), बुराई का उत्तर भलाई के लिए उत्तेजित होना (3:13) और आरोपों का उत्तर मसीह के संदेश के साथ देना है (3:18)।

अपमान का उत्तर आशीष के साथ देना (3:8-12)

कुछ उत्तरों में बोलने की आवश्यकता नहीं होती। वे मसीही लोगों के व्यवहार के ढंग से मिल जाते हैं। अपने पाठकों को शब्द और तर्क देने के बजाय पतरस ने जीवन के ढंग का आग्रह करते हुए आरम्भ किया। इसमें एक तर्कसंगत क्रम है। मसीही लोग जब तक यह दिखाते नहीं है कि प्रभु की शिक्षाएं केवल शिक्षाएं नहीं हैं, तब तक संसार को वे प्रभावित नहीं कर पाएंगे। पतरस के पाठकों को उनके द्वारा मसीह के संसार को बदलने से पूर्व मसीह द्वारा बदलना आवश्यक था। 3:8 में व्यवहार की ताड़नाओं की शृंखला में स्पष्ट रूप से कलीसिया के विरुद्ध आने वाली आलोचनाओं का उत्तर दिया गया। मसीही समाज के लिए हर शब्द में अपना निर्देश है: ''अत:

सब के सब एक मन और कृपामय और भाईचारे की प्रतीति रखने वाले, और करुणामय, और नम्र बनो'' (3:8)।

पतरस ने अपने पाठकों से पहले ''एक मन'' होने का आग्रह किया। इस वाक्यांश के लिए यूनानी शब्द नये नियम में केवल यहीं मिलता है। प्रेरित के कहने का यह अर्थ नहीं था कि अपने सामने आने वाले हर प्रश्न पर मसीही लोग पूरी तरह से सहमत हो जाएं। इसके बजाय हमारे सोचने का एक सामान्य ढंग अर्थात एक बात पर सहमत होने का सामान्य ढंग होना चाहिए। पौलुस द्वारा फिलिप्पियों को उसका आनन्द पूरा करने के लिए कहने के समय की गई ताड़ना में इससे कोई फर्क नहीं था। ''तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखो'' (फिलिप्पियों 2:2)।

''कृपामय'' शब्द पतरस की सूची में दूसरे शब्द से लिया गया है। यहां और रोमियों 12:15 में इस्तेमाल शब्द का अर्थ उसी पीड़ा और कष्ट को महसूस करना है, जो दूसरे व्यक्ति को लग रही है और इस प्रकार उसकी पीड़ा और कष्ट को दूर करने के लिए जो भी बन पड़े, करना है। पतरस यूनानी संसार में लिख रहा था, जो रोमी मनोरंजन के स्वाद में ढल रहा था यानी ऐसे मनोरंजन में जिसमें मरने तक लड़ने वाले गलैडिएटर्स भी शामिल थे। यह ऐसा संसार था जिसे करुणा और सहानूभुति की आवश्यकता थी।

कलीसिया के जीवन के लिए भाईचारे का प्रेम आधार है। मसीही लोगों के लिए एक-दूसरे से प्रेम करना आवश्यक था क्योंकि उन्होंने यीशु मसीह में परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध के द्वारा भाईचारे का एक सामान्य बंध पहना था। इस प्रकार के प्रेम के लिए यूनानी शब्द का संज्ञारूप *philadelphia* से एक एशियाई नगर का नाम रखा गया था जहां उन सात कलीसियाओं में से एक थी, जिसे प्रकाशितवाक्य में यीशु ने सम्बोधित किया। एक बड़े अमेरिकी नगर को भी यही नाम मिला है।

यूनानी लोग दया के साथ-साथ हृदय से निकलने वाली अन्दर की भावनाओं को मानते थे। पतरस की सूची के चौथे शब्द ''करुणामय'' का मूल अर्थ है ''अच्छी दया।'' NIV में ''तरस करने वाले मनों'' है। फिलिप्पी की कलीसिया के नाम समुरने के पोलीकारत का दूसरी सदी का एक पत्र कहता है कि ऐल्डर ''सबके साथ करुणामय [वही शब्द जिसका इस्तेमाल पतरस ने किया], दयालु, जो भटक गए हैं उनको वापस लाने वाले, सब निर्बल लोगों की देखभाल करने वाले, न तो विधवा, न अनाथ, न निर्धन की उपेक्षा करने वाले हों।''

पतरस की सूची के अन्तिम शब्द का KJV के अनुवाद ''नम्र'' बनो का कारण है कि NASB तथा अन्य अनुवादों में ''दीन बनो'' (या इसके समान) है, का सम्बन्ध वचन की विभिन्नता से है। यह नम्रता या दीनता के बीच अर्थ में किसी प्रकार एक-दूसरे को ठग लेने के कारण नहीं है। दीन व्यक्ति वह है, जो दूसरों का इतना ध्यान रखता है कि उसे इस बात की परवाह ही नहीं है कि उसने क्या प्राप्त किया है, वह क्या जानता है या उसके पास क्या है। उसकी दिलचस्पियां अपने आप से आगे हैं। वचन को समझने का बेहतर ढंग शायद घमण्ड या स्वार्थ जैसी विरोधी बातों में अन्तर करना है। दीनता उस समझ के साथ आती है जो हमें इस सम्भावना का सामना करने की अनुमति देती है कि हम गलत हो सकते हैं। यह चरित्र की वह सामर्थ, जिससे हम अपने पापों को मानकर अपनी गलतियों को स्वीकार कर सकते हैं।

सभ्य समाज के सबसे पुराने कानूनों में से एक यह है कि जैसे को तैसा दिया जाना चाहिए। इसे *lex talionis* या बदले का नियम कहा जाता है। निर्गमन 21:23, 24 में इससे श्रेष्ठ रूप दिया गया है। ''... प्राण के बदले प्राण का, और आंख के बदले आंख का, और दांत के बदले दांत का, और पांवों के बदले पांवों का, और दाग के बदले दाग का, और घाव के बदले घाव का, और मार के बदले मार का दण्ड हो।'' जैसा कि पहले मसीह ने किया था (मत्ती 5:38-42), पतरस ने *lex talionis* को उससे बड़े नियम के लिए रद्द कर दिया: ''बुराई के बदले बुराई मत करो; और न गाली के बदले गाली दो; पर इसके विपरीत आशीष ही दो: क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिए बुलाए गए हो'' (3:9)।

मसीही धर्म पर इतनी स्पष्ट परीक्षा और कहीं नहीं आती, जितनी मसीही लोगों को बुराई के बदले भलाई और श्राप के बदले आशीष देने को कहा जाता है। पतरस ने भजन संहिता 34:12-16 से उद्धृत किया। भजन लिखने वाला कह रहा था, ''यदि तुम जीवन की भरपूरी और भलाई को जानना चाहते हो, तो अपने शब्दों को ध्यान से परखो।'' यह एक ऐसा सबक है जिसे हम में से अधिकतर लोग सीख सकते हैं। एक अर्थ में भक्तिपूर्ण जीवन अपने अन्दर झांकने की रौशनी है। यूहन्ना 12:24, 25 और कहीं यीशु इसी बड़े विरोधाभास को दिखा रहा था। जीवन के बहुआयामी पहलू और गहराइयां उन लोगों को मिले इनाम हैं, जो बुराई से मुड़ते, जो शांति की खोज करते, और जो सच्चाई और धार्मिकता के मार्ग पर चलते हैं। ''प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उनकी विनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करने वालों के विमुख रहता है'' (3:12)।

शायद हम पुराने और नये नियम के बीच के अन्तर को बहुत अधिक बना देते हैं। वही परमेश्वर जिसने इस्राएलियों के साथ बात की, उसी ने अपनी कलीसिया से बात की। पतरस को जीवन के उस नियम को आगे बढ़ाने में कोई दिक्कत नहीं थी, जो परमेश्वर ने पहले इस्राएल पर प्रकट किया था।

बुराई का उत्तर भलाई के लिए उत्तेजित होकर देना (3:13-17)

अपने पत्र में दूसरी बार पतरस ने सीधे इन मसीही लोगों के कष्ट की बात की (3:13-17; पहली बार 1:6-9)। भलाई और धर्म के कारण आमतौर पर लोग दुख नहीं उठाते, दुख उठाना नियम नहीं है (3:13)। परन्तु प्रेरित ने स्वीकार किया कि यह माननीय है। ऐसे अन्त के लिए पतरस ने कई क्षेत्रों में सलाह दी।

केवल भलाई करने के लिए दुख उठाओ

मसीह को मानने वालों पर आने वाला हर कष्ट भलाई करने के कारण नहीं है। कई प्रकार का व्यवहार सब के लिए चाहे वह मसीही हो या नहीं, निन्दा का कारण बन सकता है। यदि उसने कोई गलती की है, तो मसीही व्यक्ति कलीसिया की आड़ में बुराई करता है और दावा करता है कि उसे अपने विश्वास के कारण दुख उठाना पड़ रहा है। बेईमानी, झूठ बोलने, चोरी करने या ऐसे किसी काम के कारण दुख उठाने से आशीष नहीं मिलती।

असम्भावित सम्भावना में कि उसके पाठकों पर भलाई करने के कारण दुख पड़ेगा, पतरस

ने यशायाह भविष्यवक्ता के शब्दों में (3:14) सलाह दी: ''जिस बात से वे डरते हैं, उस से तुम न डरना और न भय खाना'' (यशायाह 8:12)। लोग मसीही व्यक्ति को सता सकते हैं या उसकी हत्या कर सकते हैं, परन्तु इससे बढ़कर वे उसका कुछ नहीं कर सकते। पतरस सम्भवतया यीशु के उन शब्दों को दोहरा रहा था जब उसने लिमिटड कमीशन पर प्रेरितों को भेजते हुए कहा था: ''जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है'' (मत्ती 10:28)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने इस में जोड़ा, ''प्रभु, मेरा सहायक है; मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है'' (इब्रानियों 13:6)।

मसीह को अपने मन में पवित्र समझो

बहुत मामलों में संसार में होने वाली बातों पर मसीही व्यक्ति का कोई नियन्त्रण नहीं होता, जो उसके वश से बाहर हों। चाहे संयोग से हों या अधार्मिक लोगों की शरारत के कारण, भले से भले लोगों को भी कई बार बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। हम अपने ऊपर आने वाली हर बात को नियन्त्रित तो नहीं कर सकते परन्तु हम अपने मनों को नियन्त्रित कर सकते हैं यानी हम अपने मनों को मसीह में पवित्र कर सकते हैं (3:15)। मसीह को पवित्र समझने का अर्थ प्रेम, समर्पण और श्रद्धा का एकमात्र स्थान उसी के लिए रखना है। यह अपनी पहली प्राथमिकता उसे देने के लिए आज्ञा मानना है।

उत्तर देने को तैयार रहो

आगे, पतरस ने कहा, ''जो कोई तुमसे तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने के लिए सर्वदा तैयार रहो ...'' (3:15)। अंग्रेज़ी शब्द ड्डश्चश्रद्यश्द्द4 यूनानी भाषा के शब्द से लिया गया है, जिसका अनुवाद इस आयत में ''defense'' किया गया है, परन्तु जैसा कि हम इस्तेमाल करते हैं यूनानी शब्द का अर्थ ''to apologize'' अर्थात क्षमा मांगना नहीं। अपोलोजेटिक्स धर्म शिक्षा की वह शाखा है, जो मसीही विश्वास के औचित्य को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करती है। आरम्भिक शताब्दियों में, कलीसिया के शत्रुओं ने मसीही लोगों पर अपनी सभाओं में अनैतिकता रखने, परिवारों के टूटने, सरकार को क्षति पहुंचाने और अनजाने अन्धविश्वास में भाग लेने के आरोप लगाएं हैं। इन आरोपों का उत्तर देने के लिए, पढ़े-लिखे लोगों ने लेख लिखे हैं ''apologies'' कहा गया और उन्हें सम्राट या अन्य महत्वपूर्ण सरकारी अधिकारियों के नाम लिखा गया। इस अर्थ में अपोलोजाइज का अर्थ मसीही शिक्षा तथा व्यवहार का तर्कसंगत, युक्तिसंगत सफ़ाई देना है।

बीसवीं शताब्दी में मसीही विश्वास की भौतिक निष्ठा पर हमले कम नहीं हुए। बाइबल के मनुष्य के इतिहास में परमेश्वर के कार्य करने को हर जगह चुनौती दी जाती है। बिना किसी संदेह के कलीसिया को आज भी अपोलोजिस्टों अर्थात सफ़ाई देने वालों की आवश्यकता है।

इन मसीही लोगों को अध्ययन करना आवश्यक था ताकि वे उत्तर देने के योग्य होते, परन्तु उत्तर देना ही काफ़ी नहीं है। प्रेरित ने कहा कि उनके उत्तर ''नम्रता और भय के साथ'' (3:15) होने चाहिए। सच्चाई के बहुत से विवेकी खोजी मसीह से दूर चले गए हैं, संदेश के कारण नहीं

बल्कि इसे देने वाले के अक्खड़, रूखे ढंग के कारण। कई लोग अपने सिर हिलाते हुए इसलिए निकल गए हैं क्योंकि संदेश में और सिखाने वाले के संदेश देने में कोई सम्बन्ध नहीं था। किसी हद तक सुसमाचार का हर सिखाने वाला, अपने आपको सिखा रहा होता है। पतरस ने कहा कि मसीह का संदेश नम्र और आदरपूर्वक ढंग से प्रस्तुति किया जाना आवश्यक है।

शुद्ध विवेक रखें

अपनी पहली पत्री में पतरस ने ''विवेक'' शब्द का इस्तेमाल तीन बार किया (2:19; 3:16, 21)। पौलुस ने अपनी पत्रियों में बार बार इसका इस्तेमाल किया। शुद्ध विवेक की अपील का अर्थ व्यक्तिगत निष्ठा की अपील है। निर्णय में गलतियां करना एक बात है परन्तु आरम्भ से ही यह पता होने पर कि यह गलत होगा कार्य करते रहना दूसरी बात। पतरस ने कहा कि निष्ठावान मसीही पुरुष या स्त्री, जिसका जीवन उस विश्वास का नमूना है जिसे वह मानता है, अन्ततः परमेश्वर के लोगों को बदनाम करने और गलत आरोप लगाने वाला अपने आप से लज्जित होगा। मसीही लोग अपनी शर्तों को ऐसे अच्छे और विवेकी जीवनों से हराते हैं कि उन्हें मसीही संदेश के सार पर विचार करना ही पड़ता है।

आरोपों का उत्तर क्रूस के संदेश के साथ देना (3:18-22)

बुराई के बदले हो या किसी अन्य बात के भलाई लौटाने में प्रभु अपने लोगों के लिए आदर्श है। पहले पतरस ने सेवकों के लिए नमूने के रूप में यीशु को रखा था (2:18-21); फिर उसने उसे उस सिद्ध उदाहरण के रूप में उठाया जिसने बुराई का उत्तर भलाई से दिया था। यीशु अधर्मियों के पापों के लिए मरा (3:18)। पूरी मनुष्य जाति की ओर से शरीर में अपनी मृत्यु के द्वारा, वह हमें परमेश्वर के सामने ले जाने के योग्य है; परन्तु उसकी मृत्यु की कहानी में सब कुछ नहीं है। आत्मा में वह जिलाया भी गया था। अविश्वास के लिए मसीही व्यक्ति का उत्तर अन्ततः यीशु के जी उठने में था।

फिर हमें नये नियम की सबसे कठिन दो आयतें 3:19, 20 मिलती हैं। हम यीशु के उन ''आत्माओं को जो कैद में हैं'' प्रचार करने के बारे में क्या समझते हैं। जिन्होंने नूह के समय में आज्ञा नहीं मानी थी? आयतों के धर्मशास्त्रीय विचार और व्याकरणीय समस्याओं पर ध्यान करने के बावजूद इसका अर्थ अभी तक स्पष्ट नहीं है। हम इन कठिनाइयों की विस्तार से समीक्षा नहीं करेंगे पर हमारे लिए उन दो सामान्य ढंगों पर ध्यान देना उचित है जिनसे उन्हें समझा गया है।

आरम्भिक वाक्यांश ''जिसमें,'' ''जिसके माध्यम से'' (NIV), या ''जिसके द्वारा'' (KJV) की व्याख्या का बड़ा प्रश्न चिन्तित करता है। सर्वनाम का पूर्ववर्ती स्पष्टतया आयत 18 का अन्तिम शब्द ''आत्मा'' है। कइयों ने इस वाक्यांश को क्रियाविशेषण के रूप में लिया है। इस प्रकार जो प्रेरित कह रहा था कि यीशु ने नूह के समय के आज्ञा न मानने वाले लोगों में भौतिक रूप से नहीं बल्कि आत्मिक रूप से प्रचार किया। एक अर्थ में नूह या परमेश्वर की प्रेरणा पाए किसी भी व्यक्ति के प्रचार करने को यीशु के प्रचार करने के रूप में माना जा सकता है। आज्ञा न मानने वाली आत्माएं ''कैद में'' थीं। यानी पतरस के अपना पत्र लिखने के समय वह कब्र में थीं; परन्तु नूह के वचनों के द्वारा यीशु द्वारा उन्हें प्रचार करने के समय जीवित थीं।

अन्यों ने KJV के अनुवादित सर्वनाम ''जिस'' को यीशु के शरीर में मृत होने और आत्मा में जीवित होने को समझा है। इस वचन का अर्थ क्रूसारोहण के समय और प्रभु के पुनरुत्थान के बीच का कहा जा सकता है कि वह हेडिस अर्थात आत्माओं के संसार में आत्मा के रूप में गया और वहां ''कैदी'' आत्माओं को पाप और मृत्यु पर परमेश्वर की विजय की घोषणा की। उसका संदेश मन फिराव की विनती नहीं होगा। बल्कि पाप पर विजय के लिए परमेश्वर की स्तूति और महिमा करना था। प्रेरितों 2:25-28 में पतरस का भजन संहिता 16:8-11 को उद्धृत करना इस व्याख्या को समर्थन देता प्रतीत होता है। यह तथ्य कि यीशु का प्राण अधोलोक (मुर्दों का संसार, नरक नहीं जैसा कि KJV में है) में नहीं छोड़ा गया था आवश्यक रूप से संकेत देता है कि वह वहां था।

इनमें से प्रत्येक व्याख्या की अपनी सामर्थ और कमज़ोरियां हैं, परन्तु पहली व्याख्या उसमें अधिक मेल खाती है जिसे हम शेष नये नियम में से यीशु के काम के रूप में जानते हैं। इस शिक्षा को की क्रूस पर अपनी मृत्यु के बाद यीशु अधोलोक में नीचे गया था नये नियम का इतना समर्थन नहीं है, जब तक हम 3:18-22 को इसकी पुष्टि के लिए नहीं लेते। इस कारण यह समझ लेना बेहतर है कि यीशु लोगों के पास नूह के प्रचार में था जो उसी अर्थ में जल प्रलय से पहले था कि वह नबियों के प्रचार में था (1:10, 11)।

पतरस ने नूह और उसके परिवार का उल्लेख उनके बचाए जाने और मसीही लोगों के बचाए जाने के ढंग की समानता के कारण दिया (3:21)। नूह का उद्धार पानी के द्वारा हुआ था और मसीही लोगों का उद्धार भी पानी के द्वारा होता है। नूह और उसके परिवार का उद्धार पृथ्वी के पापपूर्ण जाति से शुद्ध होने से हुआ था और मसीही लोगों का उद्धार बपतिस्मे की धुलाई के द्वारा होता है। अन्य बातों में पतरस ने यह स्पष्ट किया कि यदि अधर्मी व्यक्ति के लिए पापों से पीछा छुड़ाने के लिए यीशु की मृत्यु का असर होता है तो वह केवल बपतिस्मे के द्वारा होता है। उद्धार पाए हुओं को उद्धार न पाए हुओं से अलग करने वाली रेखा संक्षिप्त रूप में बपतिस्मे के बिन्दु पर है। पतरस ने कहा कि यह बपतिस्मा शरीर की मैल धोना नहीं बल्कि आज्ञापालन का एक आत्मिक कार्य है जो शुद्ध विवेक का उत्तर है। बपतिस्मा मसीह में विश्वास के कार्य के रूप में प्रभावकारी है। 3:22 में उसके परमेश्वर के दाहिने ओर होने की बात पीछे भजन संहिता 110:1 में ले जाती है। नया नियम मसीह के ईश्वरीय होने और प्रभु होने की गवाही के रूप में बार बार इस वचन को दोहराता है।

सारांश

परमेश्वर के परिवार में भाइयों और बहनों के बीच एक मसीही के किसी वास्तविक या काल्पनिक गलती के लिए बदला लिए जाने को किसी रीति से उचित नहीं ठहराया जा सकता। जब एक मसीही व्यक्ति का अपमान होता है तो उसे उसका उत्तर आशीष के साथ देना चाहिए। अपउनी जीभ को बुराई से बचाकर वह अपने लिए भलाई और जीवन की आशिषों को सुरक्षित कर रहा होगा।

यदि ऐसा हो जाए कि हमें भलाई करते हुए दुख सहना पड़े तो हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि हमारा दुख सहने के पीछे आशीषें हैं। मसीह में हमें वह डर नहीं है जिससे

लोग आम तौर पर डरते हैं। इसके बजाय हमें उस आशा के लिए जो हम में है कारण बताने के लिए किसी को भी उत्तर देने के लिए तैयार रहना चाहिए। बुराई के बदले भलाई लौटाकर हमारे प्रभु ने स्वयं श्रेष्ठतम उदाहरण पेश किया है। वह अधर्मियों के लिए मर गया ताकि उन सब का उद्धार कर सके जो उसे ग्रहण करते और उसकी आज्ञा मानते हैं। हमारा उद्धार पानी के बपतिस्मे में मसीह के लहू के द्वारा अपने पापों से वैसे ही होता है जैसे पानी के द्वारा नूह और उसका परिवार बचाए गए थे।